(ISSN: 2393-8048)

International Seminar on September 16th, 2024
"Exploring the Frontiers of Interdisciplinary Research (ICEFIR-2024)"
Organized By: Nagpal Charitable Trust, Sri Ganganagar
Venue: Maharaja Agrasen Vidya Mandir School, Sri Ganganagar

21वीं सदी की हिंदी आत्मकथाओं में भारतीय परिवार का संक्रमणकालीन स्वरूप

मंजू, शोधकर्ता, हिंदी विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)

सारांश

21वीं सदी में भारतीय समाज तीव्र सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। इन परिवर्तनों का व्यापक प्रभाव भारतीय परिवार व्यवस्था, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक मूल्यों एवं जीवनशैली पर पड़ा है। पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था के स्थान पर एकल परिवारों का बढ़ता प्रचलन, पीढ़ियों के बीच बदलते संबंध, स्त्री-पुरुष समानता की चेतना, व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता ने भारतीय परिवार के स्वरूप को एक नई दिशा प्रदान की है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य 21वीं सदी की हिंदी आत्मकथाओं में चित्रित भारतीय परिवार के संक्रमणकालीन स्वरूप का साहित्यिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। हिंदी आत्मकथाएँ व्यक्ति के निजी जीवन के अनुभवों के साथ-साथ तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों, पारिवारिक संरचनाओं, सांस्कृतिक मान्यताओं एवं सामाजिक अंतर्विरोधों का भी सजीव चित्रण प्रस्तुत करती हैं। इस अध्ययन में आत्मकथात्मक साहित्य के माध्यम से परिवार में बदलती भूमिकाओं, माता-पिता और संतानों के संबंधों, स्त्री की स्थिति, वैवाहिक जीवन, पीढ़ीगत संघर्ष, जातिगत असमानता तथा पारिवारिक विघटन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। आधुनिकता, वैश्वीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का प्रसार और आर्थिक परिवर्तन ने पारिवारिक संबंधों में नए मूल्य एवं दृष्टिकोण विकसित किए हैं। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक पारिवारिक मान्यताओं और आधुनिक व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हुई है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह समझना है कि 21वीं सदी के हिंदी आत्मकथाकारों ने इन परिवर्तनों को किस प्रकार अभिव्यक्त किया है तथा उनके अनुभवों में भारतीय परिवार की बदलती सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान किस रूप में सामने आती है। इस अध्ययन में साहित्य को समाज का प्रतिबिंब मानते हुए आत्मकथाओं के माध्यम से पारिवारिक संक्रमण की प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया गया है। निष्कर्षतः, 21वीं सदी की हिंदी आत्मकथाएँ भारतीय परिवार के बदलते स्वरूप, संबंधों की जटिलता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा सामाजिक मूल्यों के पुनर्निर्माण को समझने का महत्वपूर्ण साहित्यिक आधार प्रस्तुत करती हैं।

मुख्य शब्द: हिंदी आत्मकथा, भारतीय परिवार, संक्रमणकालीन स्वरूप, पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकता, पीढ़ीगत संघर्ष, स्त्री विमर्श, पारिवारिक संबंध, वैश्वीकरण, सांस्कृतिक परिवर्तन, आत्मकथात्मक साहित्य